सूरह — एक कहानी

सूरह फ़ातिर

पैदा करने वाला

पूरा सफ़र — वो दरवाज़ा जिसे कोई बंद नहीं कर सकता —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 35 • 45 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्-हम्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्-समावाति वल्-अर्ज़िं
1. सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए, आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला।

मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्-नासि मिर्-रहमतिन फ़-ला मुम्सिक लहा
2. अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोलता है उसे कोई रोक नहीं सकता।

या अय्युहन्-नासु अन्तुमुल्-फ़ुक़राउ इलल्लाह
15. ऐ लोगो! तुम ही अल्लाह के मोहताज हो।

इन्नमा यख़्शल्लाह मिन 'इबादिहिल्-'उलमा
28. अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ़ वही डरते हैं जो इल्म रखते हैं।

यर्जून तिजारतल्-लन तबूर
29. वो ऐसी तिजारत की उम्मीद रखते हैं जो कभी तबाह न होगी।

व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्-नास बिमा कसबू मा तरक 'अला ज़हिहा मिन दाब्बह
45. और अगर अल्लाह लोगों का उन के किए पर मुआख़ज़ा करता तो ज़मीन की पीठ पर एक जानवर भी न छोड़ता।

दो, तीन और चार के पर

बेटा, ये सूरह तारीफ़ और अल्लाह के एक ऐसे लक़ब से खुलती है जो सिर्फ़ चंद जगहों पर आता है: '**अल्-हम्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्-समावाति वल्-अर्ज़** — **सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए**, आसमानों और ज़मीन का **फ़ातिर**।'

'**फ़ातिर**', बेटा, का मतलब वो ज़ात जिसने उन्हें **फाड़** कर खोला और कुछ से वुजूद में लाया। इस अस्ल में किसी चीज़ को चीर कर खोलने का मफ़्हूम है — जैसे बीज फटता है, या जैसे सुब्ह की पहली दरार आसमान को खोलती है। और उसी अस्ल से हमें '**फ़ितरह**' मिलता है, वो अस्ली फ़ितरत जिसपर अल्लाह ने आपको बनाया।

'**जा'इलिल्-मलाइकति रुसुलन उली अज्निहतिम्-मस्ना व सुलास व रुबा**' — जिसने **फ़रिश्तों** को पैग़ाम-बर बनाया, **परों** वाले: **दो, तीन, या चार** — **यज़ीदु**

फ़िल्-ख़ल्क़ि मा यशा — वो तख़्लीक़ में जो चाहे बढ़ाता है।'

बेटा, और कहीं कोई ये न समझ ले कि चार हद है, आयत बढ़ाती है: वो तख़्लीक़ में जो चाहे बढ़ाता है। और नबी ﷺ ने हमें बताया कि उन्होंने जिब्रील को उनकी अस्ली शक्ल में छे सौ परों के साथ देखा, उफ़ुक़ को भरते हुए।

'**इन्नल्लाह 'अला कुल्लि शै-इन क़दीर** — बेशक, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।'

और फिर, बेटा, इस सूरह की दूसरी आयत — और ये वो है जिसे आपको अपनी बाक़ी ज़िंदगी अपने सीने में रखना चाहिए:

'**मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्-नासि मिर्-रहमतिन फ़-ला मुम्सिक लहा — अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोलता है — उसे कोई रोक नहीं सकता — व मा युम्सिक फ़-ला मुर्सिल लहू मिम्-ब'अ्दिह — और जो वो रोक ले — उसे उस के बाद कोई छोड़ नहीं सकता — व हुवल्-'अज़ीज़ुल्-हकीम** — और वो ग़ालिब, हिकमत वाला है।'

बेटा, इसे दो बार पढ़िए। **आपकी ज़िंदगी के हर दरवाज़े पर एक ही हाथ है।**

अगर अल्लाह आपके लिए कुछ खोल दें — एक रिज़्क़, एक शिफ़ा, एक निकलने का रास्ता, किसी का दिल — तो कोई कमेटी, कोई दुश्मन, कोई जलने वाला रिश्तेदार, कोई मईशत और कोई हुकूमत उसे रोक नहीं सकती। और अगर वो कुछ रोक लें, तो लोगों से कितनी भी मिन्नत, कोई ताल्लुक़, कोई रिश्वत और कोई चाल उसे छोड़ नहीं सकती।

बेटा, सोचिए ये आयत कितना ख़ौफ़ हटा देती है। **हम अपनी ज़िंदगियाँ उन लोगों से डरते गुज़ारते हैं जिनके पास, इस आयत के मुताबिक़, देने या रोकने की कोई सलाहियत है ही नहीं।** वो मैनेजर जो आपको ना-पसंद करता है उस चीज़ को बंद नहीं कर सकता जिसे अल्लाह ने खोल दिया। और वो दोस्त जिसपर आप भरोसा कर रहे हैं उस चीज़ को खोल नहीं सकता जिसे अल्लाह ने बंद कर दिया।

तो लोगों से शाइस्तगी और ईमानदारी से पेश आइए, मेहनत कीजिए, अपने असबाब लीजिए — और फिर **अपना ख़ौफ़ और अपनी उम्मीद उस वाहिद हाथ की तरफ़**

रखिए जो दरवाज़े पर है।

धोका देने वाले को तुम्हें धोका न देने दो

'**या अय्युहन्-नासुज़्-कुरू नि'अ्मतल्लाहि 'अलैकुम** — ऐ लोगो, अपने ऊपर अल्लाह की **नेमत याद** करो — **हल मिन ख़ालिक़िन ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुक़ुकुम मिनस्-समा-इ वल्-अर्ज़** — क्या अल्लाह के **सिवा** कोई ख़ालिक़ है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता हो?'

'**इन्ना व'अ्दल्लाहि हक़्क़ुन फ़-ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-हयातुद्-दुन्या** — बेशक, अल्लाह का वादा **सच्चा** है, तो **दुनिया** की ज़िंदगी तुम्हें **धोका** न दे — **व ला यग़ुर्रन्नकुम बिल्लाहिल्-ग़रूर** — **और वो धोकेबाज़ तुम्हें अल्लाह के बारे में धोका न दे।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए ये **दो** अलग तंबीहें हैं, और दूसरी कहीं ज़्यादा ख़तरनाक है।

पहली: ख़ुद दुनिया से धोका मत खाओ — उसकी चमक, उसकी जल्दी, उसकी हमेशगी के वादों से।

दूसरी: '**अल-ग़रूर**' — बड़ा धोकेबाज़, शैतान — तुम्हें **अल्लाह के बारे में** धोका न दे। बेटा, ये उसका सब से माहिर हमला है। वो हमेशा तुमसे ये नहीं कहता कि अल्लाह का वुजूद नहीं। बल्कि वो तुम्हें उनकी एक बिगड़ी हुई तस्वीर बेचता है: 'अल्लाह रहीम हैं, तो ये गुनाह ठीक है।' या इसका उल्टा: 'अल्लाह अब तुम्हें कभी माफ़ नहीं करेंगे।' या: 'तुम्हारे पास वक़्त है, वो सब्र वाले हैं।'

बेटा, **दोनों इंतिहा — झूठी बे-फ़िक्री और झूठी मायूसी — अल्लाह के बारे में धोका हैं।** और ये आयत इसे शैतान की ख़ास महारत के तौर पर नाम देती है।

'**इन्नश्-शैतान लकुम 'अदुव्वुन फ़त्तख़िज़ूहु 'अदुव्वा** — बेशक, **शैतान तुम्हारा दुश्मन** है, तो **उसे दुश्मन बनाओ** — **इन्नमा यद्'ऊ हिज़्बहू लि-यकूनू मिन अस्हाबिस्-स'ईर** — वो अपने गिरोह को सिर्फ़ इस लिए बुलाता है कि वो भड़कती आग वाले बन जाएँ।'

बेटा, 'फ़त्तख़िज़ूहु 'अदुव्वा' — उसे दुश्मन **बनाओ**। ये एक हुक्म है। अल्लाह ने तुम्हें बता दिया कि वो कौन है; उसे दुश्मन की तरह बरतना तुम्हारा काम है। **एक ऐसा दुश्मन जिसके लिए तुम बहाने बनाते रहो उसे दुश्मन की तरह नहीं बरता जा रहा।**

तुम ही मोहताज हो

और अब, बेटा, एक आयत जो हर इंसान को उसकी सही जगह पर रख देती है:

'**या अय्युहन्-नासु अन्तुमुल्-फ़ुक़राउ इलल्लाह — ऐ लोगो, तुम ही अल्लाह के मोहताज हो — वल्लाहु हुवल्-ग़निय्युल्-हमीद — और अल्लाह बे-नियाज़, लायक़-ए-तारीफ़ है।**'

बेटा, ख़िताब ग़ौर कीजिए: 'या अय्युहन्-नास' — **सब** लोग। उन में से ग़रीब नहीं। हर एक। अरब-पति और भिकारी उसी एक लफ़्ज़ से बयान हुए: 'फ़ुक़रा', मोहताज।

और ये 'तुम चीज़ों के मोहताज हो' नहीं है। ये '**अल्लाह** के मोहताज' है — अगली साँस के लिए, दिल की अगली धड़कन के लिए, उन न्यूरॉनों के लिए जो तुम्हें ये जुमला पढ़ने देते हैं, धूप और बारिश और मिट्टी के लिए।

'**इंय्यशअ युज़्हिब्कुम व यअ्ति बि-ख़ल्क़िन जदीद** — अगर वो चाहे, तुम्हें ले जाए और एक **नई मख़्लूक़** ले आए — **व मा ज़ालिक 'अलल्लाहि बि-'अज़ीज़** — और ये अल्लाह के लिए मुश्किल नहीं।'

और फिर, बेटा, ज़िम्मेदारी के बारे में वो आयत जो हर बहाना बंद कर देती है: '**व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्-विज़्र उख़्रा** — और **कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा** — **व इन तद्'उ मुस्क़लतुन इला हिम्लिहा ला युह्मल मिन्हु शै-उंव्-व लौ काना ज़ा क़ुर्बा** — और अगर कोई बोझ से दबी जान किसी दूसरे को अपना बोझ (उठाने) **बुलाए**, तो उस में से **कुछ न उठाया** जाएगा — **चाहे वो क़रीबी रिश्तेदार ही हो।**'

बेटा, उस मंज़र की तन्हाई महसूस कीजिए: एक शख़्स अपने ही गुनाहों के बोझ तले लड़खड़ाता, अपने ही भाई को, अपने ही बाप को, अपने ही बेटे को पुकारता — और एक ज़र्रा भी मुंतक़िल नहीं होता।

'**इन्नमा तुन्ज़िरुल्-लज़ीन यख़्शौन रब्बहुम बिल्-ग़ैबि व अक़ामुस्-सलाह** — तुम सिर्फ़ उन को ख़बरदार कर सकते हो जो **बिन-देखे** अपने रब से **डरते** और **नमाज़ क़ायम** करते हैं — **व मन तज़क्का फ़-इन्नमा यतज़क्का लि-नफ़्सिह** — और जो **पाक** होता है वो अपने ही **फ़ायदे** के लिए पाक होता है।'

और फिर मुक़ाबलों का एक सिलसिला, बेटा: '**व मा यस्तविल्-अअ्मा वल्-बसीर** — **अंधा** और **देखने** वाला बराबर नहीं — **व लज़्-ज़ुलुमातु व लन्-नूर** — न **अंधेरे** और **रौशनी** — **व लज़्-ज़िल्लु व लल्-हरूर** — न **साया** और **लू** — **व मा यस्तविल्-अह्याउ व लल्-अम्वात** — और **ज़िंदा** और **मुर्दे** बराबर नहीं।'

बेटा, '**इन्नल्लाह युस्मि'उ मंय्यशा** — बेशक, अल्लाह जिसे चाहे **सुनाता** है — **व मा अन्त बि-मुस्मि'इम्-मन फ़िल्-क़ुबूर** — मगर तुम उन्हें नहीं सुना सकते जो **क़ब्रों** में हैं।'

बेटा, ये हर उस शख़्स के लिए एक रहीम रिहाई है जिसने किसी को हिदायत देने की कोशिश में ख़ुद को थका लिया। **तुम्हारा फ़र्ज़ पहुँचाना है। किसी को सुनाना तुम्हारे हाथ में नहीं**, और अल्लाह अपने ही रसूल ﷺ को ये बताते हैं।

अल्लाह से सिर्फ़ इल्म वाले डरते हैं

फिर सूरह तख़्लीक़ में तनव्वो' दिखाती है — पहाड़ जिन पर सफ़ेद और लाल धारियाँ और 'ग़राबीबु सूद', गहरे काले; और लोग, और जानवर, सब मुख़्तलिफ़ रंगों के। और फिर:

'**इन्नमा यख़्शल्लाह मिन 'इबादिहिल्-'उलमा — अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ़ वही डरते हैं जो इल्म रखते हैं।**'

बेटा, इस हिस्से की बनावट ग़ौर कीजिए: अल्लाह पहाड़ों, फलों, जानवरों और लोगों में तनव्वो' बयान करते हैं — और फिर फ़ौरन कहते हैं कि **इल्म** वाले ही उन से डरते हैं। क्योंकि जितनी बारीकी से आप उनकी बनाई कोई चीज़ समझते हैं, उतनी ही साफ़-तर आप उस ज़ात को देखते हैं जिसने उसे बनाया।

और बेटा, समझिए कौन सा ख़ौफ़ मुराद है: '**ख़श्यह**' — वो हैबत जो **इल्म** और

मोहब्बत के साथ आती है, न कि जाहिल की दहशत।

तो ये आयत आपको इल्म की एक कसौटी देती है, बेटा: **अस्ली इल्म ख़श्यह पैदा करता है।** एक शख़्स एक पूरी लाइब्रेरी हिफ़्ज़ कर सकता है, और अगर वो उसे आजिज़ न करे और उसका दिल नर्म न करे, तो उसने मालूमात जमा की, इल्म नहीं। और एक सादा शख़्स जो अल्लाह का नाम सुन कर काँप उठे वो उस चीज़ तक पहुँच गया जिसे उलमा पढ़ रहे थे।

'**इन्नल्लाह 'अज़ीज़ुन ग़फ़ूर** — बेशक, अल्लाह ग़ालिब, बख़्शने वाला है।' बेटा, दो नाम एक साथ ग़ौर कीजिए: **ग़ालिब और बख़्शने वाला।** वो सज़ा देने के लिए काफ़ी ताक़तवर हैं और वो बख़्शना चुनते हैं।

एक तिजारत जो कभी बर्बाद न होगी

और अब, बेटा, क़ुरआन की सब से ख़ूबसूरत कारोबारी पेश-कशों में से एक आती है:

'**इन्नल्-लज़ीन यत्लून किताबल्लाहि व अक़ामुस्-सलात व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम सिर्रंव्-व 'अलानियह** — बेशक, जो **अल्लाह की किताब पढ़ते** हैं, और **नमाज़ क़ायम** करते हैं, और जो हमने उन्हें दिया उस में से **छुपे** और **खुले ख़र्च** करते हैं — **यर्जून तिजारतल्-लन तबूर** — **वो ऐसी तिजारत की उम्मीद रखते हैं जो कभी बर्बाद न होगी।**'

बेटा, 'तिजारतल्-लन तबूर' — एक तिजारत जो कभी दिवालिया न होगी, कभी क़ीमत न खोएगी, कभी नाकाम न होगी।

और इस पोर्टफ़ोलियो की तीन चीज़ें देखिए: किताब पढ़ना, नमाज़ क़ायम करना, और ख़र्च करना — 'सिर्रंव्-व 'अलानियह', **छुपे और खुले**। बेटा, दोनों ज़िक्र हुए: छुपा देना इख़्लास बचाने को, और खुला देना दूसरों की हिम्मत-अफ़ज़ाई को। **एक मोमिन दोनों करता है।**

'**लि-युवफ़्फ़ियहुम उजूरहुम व यज़ीदहुम मिन फ़ज़्लिह** — ताकि वो उन्हें उनके अज्र **पूरे** दें **और** अपने फ़ज़्ल से **बढ़ा** दें — **इन्नहू ग़फ़ूरुन शकूर** — बेशक, वो बख़्शने

वाला, **क़द्र-दान** है।'

बेटा, वो नाम देखिए: **अश्-शकूर** — क़द्र-दान। अल्लाह ख़ुद को शुक्र-गुज़ार कहते हैं। वो हमारे थोड़े से अमल को क़ुबूल करते हैं, उसपर हमारा शुक्रिया अदा करते हैं, और फिर अपने फ़ज़्ल से और बढ़ाते हैं।

और फिर सूरह किताब के वारिसों को तीन में बाँटती है: '**सुम्म औरस्नल्-किताबल्-लज़ीनस्-तफ़ैना मिन 'इबादिना** — फिर हमने किताब का वारिस उन लोगों को बनाया जिन्हें हमने अपने बंदों में से **चुना** — **फ़-मिन्हुम ज़ालिमुल्-लि-नफ़्सिह** — तो उन में कोई **अपनी जान** पर **ज़ुल्म** करने वाला है — **व मिन्हुम मुक़्तसिद** — और उन में कोई **मियाना-रव** है — **व मिन्हुम साबिक़ुम्-बिल्-ख़ैराति बि-इज़्निल्लाह** — और उन में कोई **नेकियों में आगे** बढ़ने वाला, अल्लाह के इज़्न से — **ज़ालिक हुवल्-फ़ज़्लुल्-कबीर** — **यही बड़ा फ़ज़्ल है।**'

बेटा, इस उम्मत के तीन दर्जे। वो जो अपनी जान पर ज़ुल्म करता है — वो ईमान रखता है, मगर गुनाहों में पड़ जाता है। मियाना-रव — वो फ़र्ज़ पूरे करता और मना की हुई चीज़ें छोड़ता है। और आगे बढ़ने वाला — जो नफ़्ल नेकी में दौड़ता है।

और यहाँ रहमत है, बेटा, जिसे बहुत से उलमा ने इशारा किया: **तीनों** को 'वो जिन्हें हमने **चुना**' बताया गया। यहाँ तक कि पहला दर्जा — जो अपनी जान पर ज़ुल्म करता है — भी किताब के चुने हुए वारिसों में शामिल है। और अगली आयत में क्या आता है? '**जन्नातु 'अदिनंय्यद्ख़ुलूनहा**' — हमेशा वाले बाग़ जिनमें **वो दाख़िल** होंगे। तीनों गिरोह।

बेटा, ये ला-परवाही का परवाना नहीं — कोई सब से नीचे दर्जे में रहना नहीं चाहेगा। मगर ये जूझते हुए मोमिन के लिए उम्मीद की एक रस्सी है जो डरता है कि वो दायरे से बाहर है। **तुम अभी भी अंदर हो। अब चढ़ो।**

अगर वो उनके किए पर पकड़ता

फिर सूरह जन्नत वालों का दाख़िल होते और ये कहते बयान करती है: '**अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी अज़्हब 'अन्नल्-हज़न** — **सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए**, जिसने

हम से सारा ग़म दूर कर दिया — **इन्न रब्बना ल-ग़फ़ूरुन शकूर** — बेशक, हमारा रब बख़्शने वाला, क़द्र-दान है — **अल्लज़ी अहल्लना दारल्-मुक़ामति मिन फ़ज़्लिह** — जिसने हमें **हमेशगी के घर** में अपने **फ़ज़्ल** से बसाया — **ला यमस्सुना फ़ीहा नसबुंव्-व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब** — हमें उस में न **थकान** छूती है न कोई माँदगी।'

बेटा, उनके पहले अल्फ़ाज़ देखिए: **ग़म** के दूर होने पर तारीफ़। जो कुछ वो पहले ज़िक्र कर सकते थे — बाग़, नहरें, हमेशगी — उन सब में से वो उसका शुक्र **ग़म हटाने** पर करते हैं। ये आपको बताता है कि इस ज़िंदगी में ग़म कितना भारी है, और वहाँ वो कितनी पूरी तरह उठा लिया जाता है।

और 'मिन फ़ज़्लिह' — उसके **फ़ज़्ल** से। दाख़िल होने के बाद भी, वो इसे उसके फ़ज़्ल की तरफ़ मंसूब करते हैं, अपने अमल की नहीं।

और 'ला यमस्सुना फ़ीहा नसबुंव्-व ला लुग़ूब' — न थकान, न माँदगी। बेटा, इस दुनिया में हमारी लज़्ज़तें तक हमें थका देती हैं। वहाँ, कुछ नहीं।

फिर मुंकिरों के लिए एक तंबीह, और आग से उनकी पुकार: '**रब्बना अख़्रिज्ना नअ्मल सालिहन ग़ैरल्-लज़ी कुन्ना नअ्मल** — ऐ हमारे रब, हमें **निकाल** दे; हम **नेक अमल** करेंगे, उस से **अलग** जो हम करते थे।' और जवाब: '**अ व लम नु'अम्मिर्कुम मा यतज़क्करु फ़ीहि मन तज़क्कर** — **क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी कि जो नसीहत लेना चाहे वो नसीहत ले ले? व जाअकुमुन्-नज़ीर** — **और तुम्हारे पास ख़बरदार करने वाला आया।**'

बेटा, ये एक होला देने वाला सवाल है: **क्या तुम्हें काफ़ी वक़्त न दिया गया?** हम में से हर एक को साल दिए गए — हज़ारों दिन, हर एक एक मौक़ा। कोई ये न कह सकेगा कि मौक़ा बहुत छोटा था।

और सूरह की इख़्तितामी रहमत, बेटा: '**व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्-नास बिमा कसबू मा तरक 'अला ज़हिहा मिन दाब्बह** — और **अगर अल्लाह लोगों का उन के किए पर मुआख़ज़ा करता, तो ज़मीन की पीठ पर एक जानवर भी न छोड़ता** — **व लाकिंय्युअख़्ख़िरुहुम इला अजलिम्-मुसम्मा** — मगर वो उन्हें एक **मुक़र्रर** मुद्दत

तक **मोहलत** देते हैं।'

बेटा, उस रहमत का पैमाना जज़्ब कीजिए। अगर इंसानों पर अभी सिर्फ़ इंसाफ़ लागू कर दिया जाए, आयत कहती है ज़मीन की सतह पर कोई चलने वाली चीज़ ज़िंदा न बचती — जानवर तक नहीं, जो उन लोगों के साथ हलाक होते जिनके गुनाहों ने अज़ाब बुलाया।

यही है जितना नज़र-अंदाज़ किया जा रहा है, हर रोज़, हम में से हर एक के लिए। ये कि आप आज सुब्ह जागे, कि सूरज तुलू' हुआ, कि ज़मीन जुड़ी रही — **ये सब रहमत से दी गई एक मोहलत है, बे-गुनाही का फ़ैसला नहीं।**

तो इस मोहलत को इस्तेमाल कीजिए, बेटा। इसकी पूरी ग़ायत यही है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. हर दरवाज़े पर एक ही हाथ है: जो वो खोले, कोई रोक नहीं सकता; जो वो रोके, कोई छोड़ नहीं सकता।

2. शैतान का सब से ख़तरनाक काम तुम्हें अल्लाह के बारे में धोका देना है — झूठी बे-फ़िक्री या झूठी मायूसी से।

3. उसे दुश्मन बनाओ: एक ऐसा दुश्मन जिसके लिए तुम बहाने बनाते रहो उसे दुश्मन की तरह नहीं बरता जा रहा।

4. हर कोई 'फ़क़ीर इलल्लाह' है — सब से अमीर आदमी भी अपनी अगली धड़कन के लिए उसी का मोहताज है।

5. उस दिन कुछ मुंतक़िल नहीं होता, क़रीबी रिश्तेदार तक को नहीं — और तुम किसी को सुना नहीं सकते; सिर्फ़ पहुँचाओ।

6. अस्ली इल्म ख़श्यह से परखा जाता है: अगर वो तुम्हें आजिज़ न करे, तो वो मालूमात थी।

7. उस चीज़ में तिजारत करो जो कभी दिवालिया न हो — तिलावत, नमाज़, और छुपे

और खुले दोनों तरह देना।

या अल्लाह, हमारे लिए वो खोलिए जिसे कोई रोक न सके, हमें अपने बारे में धोका खाने से बचाइए, और हमें ऐसी तिजारत अता कीजिए जो कभी बर्बाद न हो। आमीन।